आपातकाल में सृजन फुलवारी

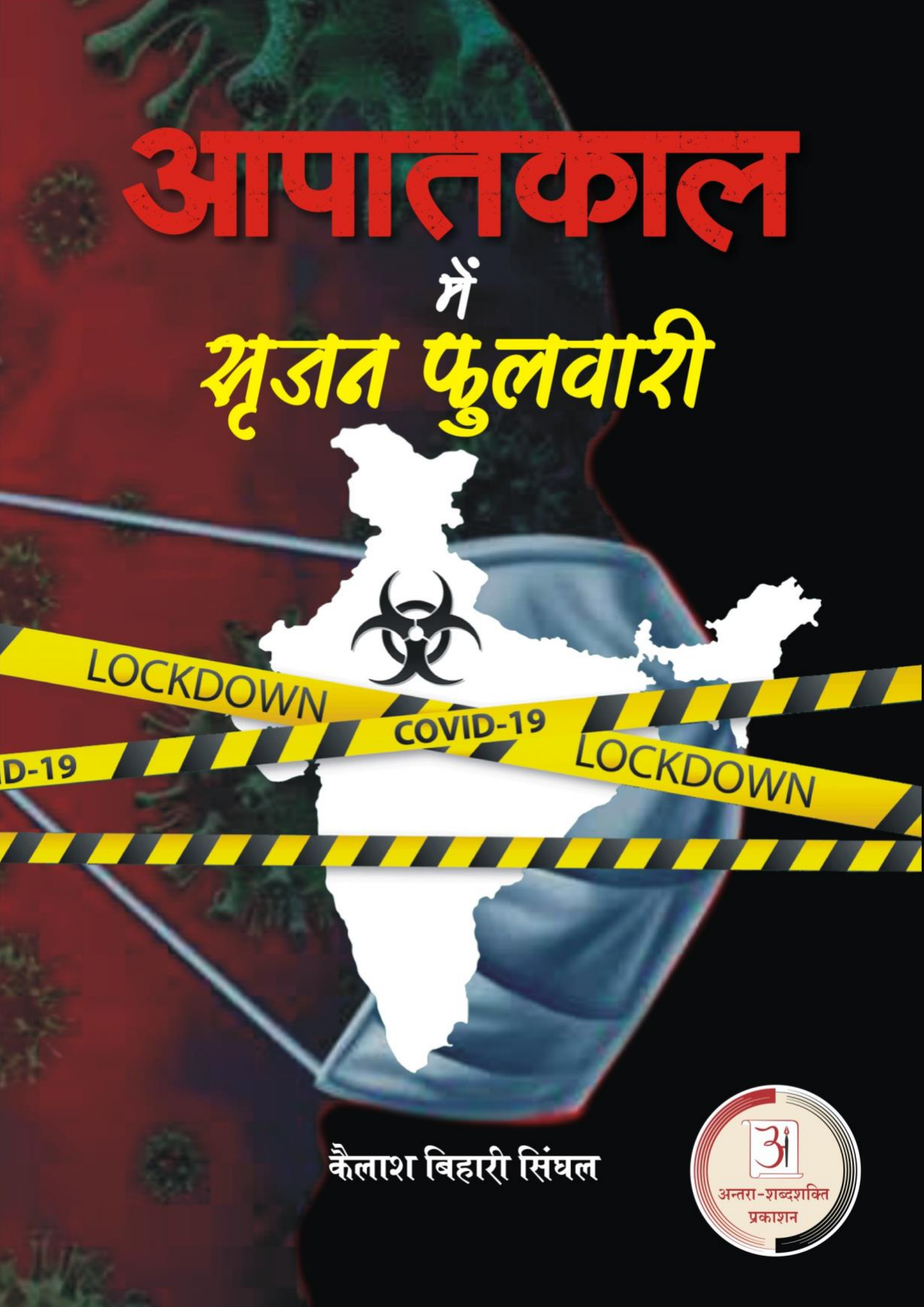

कैलाश बिहारी सिंघल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

कैलाश बिहारी सिंघल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-186-2
संपादक- डॉ प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (मप्र) 481331
दूरभाष- (कार्या) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmailcom
वेबसाईट- wwwantrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, **कैलाश बिहारी सिंघल**
मूल्य- 5000 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY KAILASH BIHARI SINGHAL
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	यादों का सृजन	6
2.	मोती	7
3.	जीत का सेहरा	8
4.	मजदूर	9
5.	क्षणिकाएं	10
6.	प्यास	11
7.	सुलह	12
8.	मौसम	13
9.	निर्णय	14
10.	कोहरा	15
11.	दहलीज़	16
12.	ये कैसा हमसाया	17
13.	मधुबन	18
14.	मदहोश	19
15.	तू क्या जाने	20
16.	खबर	21

यादों का सृजन

तेरी बातों के खंजर
शूल चुभाते रहे
पर
तेरी यादों के मंजर
फूल खिलाते रहे
जिंदगी में तेरा आना
और
आकर यूँ चले जाना
एक कहानी में खो गया
जैसे
ज़िस्म से रूह का रिश्ता
फिर से रूहानी हो गया
क्या हुआ?
क्यों हम मजबूर थे?
इतने क्यों मगरूर थे?
जब
पास में थी
सृजन की दौलत
खास हो गई
सृजक की शोहरत
दूर हो गए ग़म के अंधेरे
पास आ गए सरे राह सवेरे
फिर क्यों
इतनी बात बढ़ गई
पवित्र रिश्तों पर ही चढ़ गई
एहसासों के छवि चित्र को
यादों के स्वर्णिम कांच में मढ गई?

मोती

खुद को सीपी में ढाल सकते हैं
हम भी मोती निकाल सकते हैं

जब से देखा है आलमे साहिल
कश्ती तूफां में डाल सकते हैं

राज की बात राज रहने दो
रिश्ते यूँ भी सम्हाल सकते हैं

हम यतीमों का वो ही है मालिक
जो हमें दिल से पाल सकते हैं

तुमने कैसी ग़ज़ल लिखी 'केसु'
लोग दिल भी उछाल सकते हैं

जीत का सेहरा

राहे उल्फत में पुकारूँगा किसको..?
जो तुम न होगी निहारूँगा किसको..?

इश्क-ए-जंग में, ज़हर भी, अमृत है...
खुद ही पियूँगा...पिलाऊंगा किसको...?

प्रेम, प्यार, तकरार, गुस्सा, रूठना...
खुद ही मान जाऊँ, मनाऊंगा किसको..?

हार जीत न होती प्रेम के लिहाफ में...
खुद ही हार जाऊँ, हराऊंगा किसको..?

विज्ञान के बस में नही मिट्टी बनाना...
यह बात जाकर, बताऊंगा किसको..?

जश्ने आज़ादी के जलसे में आखिर
जीत का सेहरा, बंधाऊँगा किसको..?

मजदूर

वो तनाव में नही...
क्यो कि...
उसके चेहरे पर पसीने का नूर है...
जी हाँ... हुज़ूर..ये मज़दूर है...!

वो लाचार नही...
क्यो कि...
उसे मेहनत की कमाई पर गुरुर है...
जी हाँ... हुज़ूर..ये मज़दूर है...!

वो बीमार नही...
क्यों कि...
पेट श्रम करने को करता मजबूर है...
जी हाँ... हुज़ूर...ये मज़दूर है...!

क्षणिकाएं

कर्म की दौलत
रुपया पैसा
गहने और ज़मीन
दिखावे का बाजार है...
शोहरत का शृंगार है...!

मर्म की दौलत
चेहरा,चाल, चरित्र
स्वाभिमानी व्यक्तित्व
मददगार व्यवहार है....
मेहनत का शृंगार है....!

धर्म की दौलत
सतकर्म की बदौलत
पुरखों की विरासत
इज्जत के औजार है....
मोहलत का शृंगार है...!

शर्म की दौलत
पाश्चात्य संस्कृति
अत्याधुनिक विकृति
बेशर्मी का संसार है....
सोहबत का शृंगार है...!

ज्ञान की दौलत
देती सदा शोहरत
सहनशक्ति से सृजन
अनुशासित किरदार है...
रहमत का शृंगार है...!

प्यास

ज़िस्म से उम्र तलक हाथ मिलाने से रही,
रूह की प्यास तेरा साथ निभाने से रही।

ज़िन्दगी धूप है साये में इसे ले आओ,
इस बियाबान में अब छांव तो आने से रही।

राज़ की बात है तो दिल में इसे दफ़्न करो,
बात बढ़ जाए तो फिर घात हटाने से रही।

रूह की प्रीत को अल्फ़ाज़ का शाना दे दो,
गीत ऐसा है ये जो गा के तो जाने से रही।

राहे उल्फत से मुहब्बत के उजाले ले लो,
ज़ुल्मत ए राह तो अब राह दिखाने से रही।

सुलह

सुलह कर लो, आंसू न बहाना।
पैरों में बेड़ीयां, जालिम ज़माना।।

समझौतों के दामन में डरा सुकून।
सन्तोष दौलत, मुश्किल कमाना।।

झूठ बयाँ करते होंगें न्याय आईने।
अना का आँचल, सच से बचाना।।

आसमां में होगी तारों की नुमाइश।
सूरज को तुम, ना चाँद से डराना।।

सुलह की चाहत रखती सियासत।
दोनो सभाओं में, बिल पास कराना।।

"केसू"सजल हुई या हो गई गजल..?
तुतलाती कलम है, पढ़कर बताना।।

मौसम

मेरे घर अगर उनका आना ना होता,
आज मौसम इतना सुहाना ना होता..!

नज़र-ए-दौलत भरे नैनों की तिजोरी,
मुफ़लिसी आंसू का बहाना ना होता..!

तोड़ दो रस्मों रिवाजों के सारे बंधन,
दिलों की धड़कन में ज़माना ना होता..!

आंखों के समन्दर में पलकों के किनारे,
यादों की कश्ती का फसाना ना होता..!

केसू की महफ़िल से ठहाके है गायब,
गम के दौर में अब हँसाना ना होता..!

निर्णय

आज हम इस निर्णय तक पहुंचे...
ज़ख़्म लेकर न्यायालय तक पहुंचे..!

सहपाठी बिछुड़ गये मेरे जब सब...
सूची के साथ विद्यालय तक पहुंचे..!

ईश्वर प्रदत्त रिश्तों में तो आई दीवार...
अपने बनाये रिश्ते हृदय तक पहुंचे..!

स्वार्थ स्वप्न सजाते सब अपने अपने...
बीमार माँ के गहने विक्रय तक पहुंचे..!

अब ये गीत ग़ज़ल किसको सुनाये...
उस्ताद कहते है केसू लय तक पहुंचे..!

कोहरा

देखो कोहरा छाया है,
प्रेम सन्देसा आया है।

धुंध छाई मन आंगन,
तन भी तो भरमाया है।

तुम आओ तो बात बने,
कुहासा क्यों सजाया है।

ये मौसम क्यूँ सुहाना है,
घूँघट में कौन शर्माया है।

खामोशी में ये कैसा शोर,
शायद दिल चटकाया है।

रातों की अब क्या तलब,
चाँद दिन में भी आया है।

ग़ज़ल का वो प्यासा आंसू,
"केसू" की आंख से आया है।

दहलीज़

बिछड़कर याद तू आई बहुत है..
तेरी दहलीज चिकनाई बहुत है..!

यूं दिन तो कट ही जाता है किसी दम
विरह की रात तन्हाई बहुत है...!

बिछड़ना और मिलना रंग दो हैं
मगर इस दिल में परछाई बहुत है..

तसव्वुर में यूं आंखे छेड़ जाना...
तुम्हारी हर अदा भायी बहुत है...

मिलन के वो हसीं पल ही खजाने..
'ग़ज़ल 'केसू' ने पर गाई बहुत है..!

ये कैसा हमसाया

रात यादों में कटी दिन भी तो भरमाया हुआ है,
कैसे कोई मन सम्हाले तन भी शरमाया हुआ है।

ज़िन्दगी के मोड़ पर ये कैसा हमसाया खड़ा है,
हर नगर प्यासा मिला है हर सफर जाया हुआ है।

प्यार के इस दौर में हमको बताओ क्या करें हम,
हीर का आँचल है घायल रांझा घबराया हुआ है।

शहर के इन शायरों में बहर तो सबकी जमी है,
ग़ज़ल करती ऐश 'केसु' गीत भी गाया हुआ है।

मधुबन

ज़िस्म की चाह मन से बताया कर।
बे-फिजूल बज़्म मत सजाया कर।।

प्रेम की भाषा बसती है आंखों में।
ख्वाबों में घरौंदे मत बनाया कर।।

रात को महकना दिन में धड़कना।
हर दम दिवाली मत मनाया कर।।

पलकों का साहिल आंसू का सागर।
आंखों से यूँ आंसू मत बहाया कर।।

तू आये तो महके "केसू" का मधुबन।
कागज़ी फूलों से मत महकाया कर।।

मदहोश

शोहरत की फ़िज़ाओं में,,
इतना मदहोंश क्यूँ है..?
न मिलन की तमन्ना है,,,,
ना ही कोई गुफ़्तगू है..!

लिबासों की महफ़िल में,,
तहज़ीब का पैबन्द क्यूँ है..?
न रिवाजों की परवाह है,,,,
ना ही कोई रूबरू है..!

ज़िस्मों की नुमाइश में,,
ममता का आँचल क्यूँ है..?
फैशन की सुगन्धों में,,,,
वासना की बू ही बू है..!

ज़ज़्बातों की झील में,,
"केसू" के ये आंसू क्यूँ है..?
अंजाम-ए-महोब्बत में,,,,
एहसासों की खुशबू है..!

तू क्या जाने

तन की चाह मन से बताया कर
दिल ए महफ़िल मत सजाया कर।

प्रेम की भाषा बसती है आंखों में
स्वप्नों में घरौंदे मत बनाया कर।

रात को महकना दिन में धड़कना
मुझसे हर बात मत छुपाया कर।

पलकों के किनारे खारा है सागर
बे फ़िज़ूल आंसू मत बहाया कर।

"केसू" की चाहत को तू क्या जाने
रूठ जाऊँ मैं तो मत मनाया कर।

खबर

बात बात पर लड़ता हूँ मैं।
हर पल खबर पढ़ता हूँ मैं।।

किसने किसको दी गालियां।
सच बोल सूली चढ़ता हूँ मैं।।

पैरों में बेड़ियों की है झंकार।
फिर भी पायल गढ़ता हूँ मैं।।

वतन की खातिर मर जायेंगे।
भारत माता की दृढ़ता हूँ मैं।।

तीन रंगों ने जगाया राष्ट्र प्रेम।
तिरँगा लेके आगे बढ़ता हूँ मैं।।

सच बयाँ कर टूटता है आईना।
झूठ बोल कौने मैं सड़ता हूँ मैं।।

"केसू" वसीयत में होगा तिरँगा।
जिसे लेके सीमा पे लड़ता हूँ मैं।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आज के दौर में तरक्कियों की प्रतिस्पर्धा में अपनी महत्वाकांक्षाओं से वशीभूत होकर व्यक्ति की दिनचर्या बहुत ही व्यस्त होकर अवसाद के गहरे तनाव में सफर कर रही है, हमने अपनी सृजनशीलता भी व्यस्तता के हवाले कर दी, एक बीमारी ने महामारी का रूप धारण कर पूरे विश्व को गहरे संकट में डालकर सभी कामधंधे बन्द करवाकर घरों में ही रहने को मजबूर कर दिया, आपातकाल के इस भयानक दौर में व्यक्ति अपना समय सकारात्मक सृजन की ओर मोड़कर इन अवसाद के पलों को विधाता द्वारा प्रदत्त स्वर्णिम काल में बदल सकता है...!

साहित्यिक समूह अन्तरा शब्दशक्ति की प्रेरणा ने रचनाकारों को खाली समय के अवसाद से बाहर निकलकर नव चेतना में नव सृजन के लिए प्रेरित किया, मजबूरी में घर के एकांत की घुटन में जो नैराश्य का साया मानस पर छाया तो इस निराशा से निकलने के लिए इस सुनहरे अवसर ने छुपी हुई रचनाधर्मिता को जाग्रत कर दिया, जिससे मन में आशाजनक उत्साह का संचार हुआ, सृजन के फूल शब्द बनकर कागज पर उतरने लगे, रात में अहनलाइन काव्यगोष्ठियाँ आयोजित होने लगी, नए नए मित्र, नए नए सृजन होने लगे, एक माह से सृजन के नित नए अनुभव होने लगे...।

अन्तरा शब्दशक्ति की संस्थापक डॉ. प्रीति सुराना की ही प्रेरणा से मेरा प्रथम सृजन हुआ था, और आज उन्ही की दी हुई प्रेरणा काम आई, निरन्तर सृजन की उसी प्रेरणा से एक माह से ऑनलाइन काव्य गोष्ठी को संचालित कर मैं भी आपातकाल के इस दौर में साहित्य सृजन कर उसे प्रस्तुत करने की अनूठी महफिल सजा पाया... इसके लिए मैं अन्तरा शब्द शक्ति की संस्थापक डॉ प्रीति सुराना जी का सदैव आभारी रहूंगा...

माँ वीणापाणि उनके प्रयासों को सदैव सार्थक करे....

इन्ही शुभ भावनाओं के साथ सादर नमन...

रचनाकार

कैलाश बिहारी सिंघल

संस्थापक- काव्यप्रेमियों की महफिल

कॉटन ब्रोकर, ए.बी.रोड, मंगल नगर,
धमनोद, जिला- धार (म.प्र.)
पिन- ४५४५५२

Email- kailashbsinghal2014@gmail.com
Mobile - 7089046287, 7999706858

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-186-2

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/